ॐ

नमः सिद्धेभ्यः ।

सँघई भारामल कृत-

अथदानकथाप्रारम्यते

सवैया तेईसा ।

देव नमौ अर्हंत सदा अरु सिद्ध समूहनकों चितलाई ।
सूर अचारजकों प्रनमो प्रनमो जु उपाध्यायके नित पाई ॥
साधनमों निर्ग्रंथ मुनी गुरु परम दयाल महा सुखदाई ।
जे पंच गुरू जगमैं सु नमों जिनके सुमिरें भव ताप नशाई॥१॥

दोहा—पंच परम गुरु सुमिरिकैं, सरस्वतिकों शिरनाय।
दान कथा बरनन करौं, सुनौ भविक चितलाय ॥२॥

चौपाई।

श्री गौतमके सुमिरों पाय। दान कथा जु कहों मन लाय॥
दान बड़ो संसार मझार। दान करौ जु सबै नर नारि ॥३॥
दान विना धृग जीवन होय। तातैं दान करौ सब कोय॥
धनकी सोभा जानौ दान। दान विना नर पसू समान ॥४॥
दानहिंतें धन संपति होय। दुख दरिद्र नाशै सब कोय॥
माफिक सक्ति दान नित देय। इस भव यश पर भव सुख लेय ॥५॥
दान कहो जु चारि परकार। भिन्न भिन्न सुनियै नरनारि॥
प्रथमहिं दीजै दान अहार। जासों लच्छि भरै भंडार ॥६॥

दूजो औषधि दान सु देय । पर भव निरमल तनसो लेय ॥
होय निरोग ताको जु शरीर । कामदेव सम गुन गंभीर ॥७॥
तीजो शास्त्रदान सुखकार । तासों उपजै बुद्धि अपार ॥
पंडित ह्वै सबमें शिरमौर । ताकी सरवरि करै न और ॥८॥
उत्तम कुलमें उपजे जाय । दुख दरिद्र सब जाय नशाय ॥
चौथो अभय दान सुखकार । सो जानो सबमें सिरदार ॥९॥
मारत देखै जियकों कोय । ताके प्रान बचावै सोय ॥
कै तौ हुकम थकी अन्न जान । सो जु बचावै ताके प्रान ॥१०॥
ना तरु द्रव्य जु दै करि सोय । ताके प्रान बचावै कोय ॥
द्रव्यहुकी जौ सकति न होय । तन बलसों जु बचावै सोय ॥११॥
जौ एक हू सकति नहिं होय । मनमें करुना कीजौ सोय ॥

मेरो जोर चलै अब नाहिं। मुझ आगें यह घात कराहिं ॥१२॥
सकति सु माफक दंड सु लेय। प्रोषादिक उपवास करेय ॥
इस विधि दान चतुर परकार। भाँषो श्रीमुनि मुखतैं सार ॥१३॥
तातैं दान करौ सब कोय। दानहिं सार जगतमें होय ॥
दान दयो वज्रसैंनि कुमार। ताको कथन सुनो नर नारि ॥१४॥
जंबू दीप दीपनमें सार। भरत क्षेत्र सोभै अधिकार ॥
मरहट देश तहाँ अब जान। धारापुर तहँ नगर बखान ॥१५॥
सो नगरी महिमा को कहै। अमर पुरी मानो वह लहै ॥
सब सोभा जु बरनि करि कहौं। बढ़ै कथा कछु अंत न लहौं ॥१६॥
तिस नगरीको भूपति जान। यशो भद्र तसु नाम बखान ॥
परजा पालै अति सुखकार। दीन जननको पालन हार ॥१७॥

न्याय नीतिसों नित पग धरै । भूलि अनीति न कबहूं करै ॥
ताही नगर इक सेठि सुजान । नाम महीधर कहो बखान ॥१८॥
पूरव पुन्य उदय अब सोय । ताके घर लछिमी बहु होय ॥
छप्पन धुजा लहकैं जहँसार । जाकैं छपन कोटि दीनार ॥१९॥
हेमवती जाके घर नारि । शील वंत गुनकी अधिकार ॥
नित प्रति पूजा दान सु करै । जिनवर नाम सदा उच्चरै ॥२०॥
ताकैं युगल पुत्र सो भए । दुख सुख रूप तहाँ परिनए ॥
जेठो है सो मतिको हीन । लघुतौ जानौ चतुर प्रवीन ॥२१॥

दोहा ।

जेठो मति हेठो कुटिल, लघु सु सरल परिनाम ॥
उपजे एकहि कूखमें, पाप पुन्य परमान ॥ २२ ॥

चौपाई ।

जेठो है महसैनि कुमार । बज्रसैनि लघु जानौ सार ॥
बसु बसु बर्ष तने जब भए । मुनिके पास पढ़नकों गए ॥२३॥
जेठो सठ बुद्धी अब जान । मूरख है सो दुखकी खान ॥
बरषें सीं बीतीं अब सोय । अंकु एक आवै नहिं कोय ॥२४॥
लघुतौ जानौ चतुर प्रवीन॥ सो जानौ अति गुन करि लीन ॥
एकु जु अंक पढ़ावै मुनी । तातैं कुमर पढ़ै चौगुनी ॥२५॥
सो षट महिना भीतर सार । विद्या सर्ब पढ़ी अधिकार ॥
फिरि दोनों निज घरकों गए । तात पास सो पहुंचत भए ॥२६॥
दोनो सुतन बचन सुनि सोय । वह सठ वह जु चतुर अब होय ॥
जेठो देखि भयो जु उदास । लहुरो देखैं परम हुलास ॥२७॥

दोहा ।

इस विधिसौं दोनो कुमर, रहत भये तहँ सोय ॥
और कथन आगें अबै, जो कछु जैसो होय ॥२८॥

चौपाई ।

देश देशमें जौंहरी जान । बशै तहाँ बहु धनकी खान ॥
तिनकें पुत्री सुंदर सार । जानो तहां गुनन अधिकार ॥२९॥
तिनकी सगाई आवैं सार । लहुरे कुमरकों अधिक सुसार ॥
जेठे कुमरको जानो सोय । करै कबूल सगाई न कोय ॥३०॥

गीता छंद ।

इतनी जु सुनिकरि सेठि जबही मनमें करत विचार जू ।
जेठेके आगे लघुकों परनो जीवनकों धरकर जू ॥

जेठेके आगें लघुकों व्याहों पिता धरम यह है नहीं।
तातें जु पहिलें जेठो परनौ तब लघुकों व्याहौ सही ॥२१॥

चौपाई ।

एसो मनमें करत बिचार। आगें और सुनौ बिस्तार ॥
जन्म दरिद्र बनिक इक जानि। सो परदेशी कहो वखानि ॥२२॥
ताकें एक सुता अब सोय। षोड़स बर्ष तनी जो होय ॥
पूरब पाप उदय अब जानि। दारिद्रीकें जनमीं आनि ॥२३॥
रूपवान जानौ अब सार। शीलवती गुनकी अधिकार ॥
सो आयो धारापुर मांय। आगें और सुनौ मनलाय ॥२४॥
सेठि सुनी जह खबरि जु सार। मनमें कैसो करत विचार ॥
कछुक द्रव्य अब दै करि सोय। जेठे सुतकों परनो सोय ॥२५॥

एक दिवश जु बनिक बुलवाय । तासों तब कैसें वतलाय ॥
आदर बहुत करो सनमान । बहु विधि दीनो बीरा पान ॥३६॥
तबहि बनिकसों कैसें कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥
तुमपर कछु हम मागैं जोय । अब हमकों दीजे तुम सोय ॥३७॥
तबही बनिक बोलो कर जोरि । सेठि बचन तुम सुनौ बहोरि ॥
तुम लायक हमपै कह होय । जो मो पर जाचत हौ सोय ॥३८॥
तबही सेठि फिरि कैसैं कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥
तुमरे घर पुत्री है सार । हम सुतकों परनो सुखकार ॥३९

छंद गीता ।

करजोरि करि तब, बनिक बोलो सेठि सुनो मन लायकें ।
कोटी जु ध्वज तुम साहु जानौ मै दरिद्रो आयकें ॥

तुमरी जु सरवरि को जु नाहीं बात सुनौ सुखकार जू ।
तुम जोग लायक हम जु नाहीं यह सुनो निरधार जू ॥४०॥
इतनी जु सुनि करि सेठि बोलो बनिक सुन निहचैं सही ।
लछमी जु अति चंचल सु जानौ कहुँ सदां जु रहीं नहीं ॥
आखरि जु हम तुम एक सबही बात सुनो मन लायकैं ।
ज्यों त्यों संबोधो बनिक तबहीं लई कबूल करायकैं ॥४१॥

दोहा ।

अपनी अपनी गरजकों, इस जगमें नर सोय ।
कहा कहा करतो नहीं, गरज बावरी होय ॥ ४२ ॥
लछिमी लोभ दिखायकें, बड़ो करो सनमान ।
लई कबूल करायकैं, तसु पुत्री गुनवान ॥ ४३ ॥

चौपाई ।

तुरतहिं पंडित लयो बुलाय । घरी मुहूरत दिन सुधवाय ॥
मंडफ पुनि तब दयो छवाय । व्याह रचो ताको सुखदाय ॥४४॥
इत उत द्रव्य जु दै करि सोय । व्याह करो जेठे सुत कोय ॥
बाजे बजैं तहाँ सुखकार । जुवती गावैं मंगल चार ॥४५॥
भामरि परीं तहाँ अब सोय । बहु विधि आनँद मंगल होय॥
इस विधिसौं महसैन कुमार । सो परनो जानौ सुखकार ॥४६॥

दोहा—इस विधिसों जेठो कुमर, व्याहि लयो सुखकार ।
अब लघु सुतके व्याहको, वरनन सुन नरनारि ॥४७॥

चौपाई ।

मरहट देश बसै सुभजान । महापुरी तहां नगर बखान ॥

सोभा बरनत होय अबार । मानौ स्वर्गपुरी अवतार ॥४८॥
ताहि नगर इक सेठि सुजान । सोमसैन तसु नाम बखान ॥
पूरव पुन्य उदय अब सोय । जाके घर लछिमी बहु होय ॥४६॥
ताकैं एक सुता अवतरी । मदनवती जानो गुनभरी ॥
सुन्दर रूप अधिक गुनधार । मानौ सुर कन्या अवतार ॥५०॥
ताकी सगाई टीका सार । बज्रसैनकौं भेजो हार ॥
पहुंचो विप्र धारापुर जाय । सुनिकैं सेठि महा सुखपाय ॥५१॥
नगर बुलावा दीनो जबै । जुरे नगर नर नारी तबै ॥
जुवतीं गावैं मंगलचार । अनँद वधाए होत अपार ॥५२॥
घरी मुहूरत दिन सुधवाय । टीका कुमरको लयो चढ़ाय ॥
जाचक जनकों दान जु दयो । सज्जनको सनमान सु लयो ॥५३॥

विप्र विदा कीनो पुनि जबै । दयो अतुल धन ताकौं तबै ॥
चलत भयो तहँतें अब सोय । दिनअरुरातिगिने नहिंकोय ॥५४॥
चलत चलत जब कुछ दिन गए । महापुरीमें पहुँचत भए ॥
सब वृत्तान्त कहो समझाय । सुनिकरि सेठिपरमसुख पाय ॥५५॥

सोरठा ।

मुहूरत दिन सुधवाय, सुभ लगुनैं पठवाइयो ।
और सुनो मनलाय, जैसो कथन जु आइयो ॥ ५६ ॥

चौपाई ।

टीका दिन पहुँचो जब आय । तब तहां सजी बरात बनाय ॥
हय गय रथ वाहन करि सार । चउरँग दल साजे असवार ॥५७॥
अरबी सुतरीं अरु करताल । तूर मृदंग भेरि कंसाल ॥

सब सोभा जु बरनि करि कहौं। बढ़ै कथा कछु अंत न लहौं ॥५८॥
चलत चलत जब कछु दिन गए। महापुरीमैं पहुँचत भए ॥
डेरा बागन दीने जाय। तहां निसान रहे फहराय ॥५९॥
नेगचार तहँ वहु विधि भए। अरु षटरसके भोजन दए ॥
एक पहर निशि बीती जबै। सुभ बारौठो कीनो तबै ॥६०॥
हय गय रथ बांहन सजवाय। चउरँग सैन सजी सुखदाय ॥
अरबी सुतरी तहँ बजवाय। नौबतिखानो दयो भराय ॥६१॥
तुरही सुरही अरु करनाल। तूर मृदंग झांझ धुनि ताल ॥
आतसबाजी छूटै सोय। बाजनके कुहराम जु होय ॥६२॥
इस विधिसौं दरबाजैं जाय। बरकों देखि सेठि सुखपाय ॥
सोभो दीनो अधिक अपार। कौन कहै ताको विस्तार ॥६३॥

कंचन कलश दए तहँ सोय । खासा मलमल आदिक होय ॥
कुंडल कड़े दीने सुखकार । अरु दीने गज मोतिन हार ॥६४॥
माल खजाने दीने सोय । कहँ लौ ताको बरनन होय ॥
फिर आये निज डेरन माहिं । अनँद बधाए भए बनाय ॥६५॥
बहुत बात को कहै बढ़ाय । राखे तीन दिवस बिरमाय ॥
चौथो दिन लागो पुनि जबै । भई बरात विदा सो तबै ॥६६॥
पुत्रीकों समझावै तात । सुन लीजो अब हमरी बात ॥
कुलकी टेक चलो तुम सोय । जासौं मेरी हँसी न होय ॥६७॥
तुमतैं जेठी जो कोउ होय । भूलि न उत्तर दीजो कोय ॥
सासु हुकम तुम सिर पर धरौ । यह आज्ञा मेरी चित धरौ ॥६८॥
इस विधि सीख तात जब दई । पुत्री चितमें सब धरि लई ॥

कूंच करो तहँतैं अब सोय । दिन अरुरातिगिनैनहिंकोय ॥६९॥
चलत चलत जब कछु दिन गए । धारापुरमैं पहुँचत भए ॥
पहिलें श्रीजिन मंदिर जाय । बरकन्याकौं धोक दिवाय ॥७०॥
वसु विधि पूजे श्रीजिनचंद । जातैं कटैं करमके फन्द ॥
फिर घर मैं बहु लीनी सार । जुवती गावैं मंगलचार ॥७१॥
जाचक जनकों दान सु दयो । सज्जनको सनमान सु लयो ॥
इस विधिसों घर आये सार । अनंद बधाए होत अपार ॥७२॥
दोहा—इस विधिसों अब व्याह करि , निजघर आए सोय ।
और कथन आगें सुनो , जो कछु जैसो होय ॥७३॥
जेठो लघु दोनो कुमर , व्याहि लए सुखकार ।
और कथन आगें भाविक , सुनो सबै विस्तार ॥७४॥

चौपाई।

जेठो मनमें करत विचार। देखौ तात की दुविधा सार॥
जनम दरिद्रीकैं अब सोय। ताकैं मोकों परनो होय॥७५॥
कोटीध्वज जौंहरीकैं सार। सो परनो लहुरो जु कुमार॥
हय गय रथ दीने सजवाय। वहुत द्रव्य तहँ खर्च कराय॥७६॥
ऐसैं मनहिं विचारै सोय। मानै दोष लघुसों वहु जोय॥
लघुतौ मानै वासों प्रीति। वह राखै वासौं विपरीति॥७७॥
दोहा—इस विधिसों दोनो कुमर, रहत भए अब सोय।
निज निज टेव न छांड़ई, जैसी जाकी होय॥७८॥

गीता छन्द।

तिस काललब्धि सु आय पहुँचो सो सुनो नरनारि जू।

एक दिन पुनि सेठि जानो चढ़ो महल सुखकार जू ॥
सो सांझ समए करत संध्या जपत उर नवकार जू ।
बज्रपात जु तापै टूटो प्रान गए ततकाल जू ॥ ७६ ॥
तहँ शुद्ध मन करि प्रान छूटे जपत उर नवकार जू ।
प्रथमहिं स्वरगके मध्य जानौ लयो सुर अवतार जू ॥
तातैं सुनो नर नारि सबही जपौ उर नवकार जू ।
जाके जपत दुख पाप छूटैं होत भवदधि पार जू ॥ ८० ॥

चौपाई ।

कोलाहल जु नगरमैं भयो । सबरो नगर तहां जुरि गयो ॥
आए भूप तबहिं तहँ सोय । दोनौ सुतन समझावै जोय ॥८१॥
जहतौ कालबली अधिकाय । जासौं जोर चलै कछु नाहिं ॥

शेष खगेश महेश जु सोय । कालके वसमें हैं सब कोय ॥८२॥
इस विधि समझाए सु कुमार । दई दिलासा तब भूपाल ॥
सेठिके तनकों दग्ध कराय । निजनिजघरपहुँचेसब जाय ॥८३॥
दोनों भ्रत रहैं अब सोय । निज निज टेव न छाडैं कोय ॥
इस विधिसों जु कछू दिन गए । आगें और जु कारन भए ॥८४॥
एक दिवस भूपति दरबार । बैठो तो जो सभा मझार ॥
मंत्रिनसौं तब भूपति कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥८५॥
पुत्र सेठिके हैं अब दोय । कहो तातपद किसकों होय ॥
तब मन्त्री बोलैं करजोरि । हो महराज सुनो सु बहोरि ॥८६॥
न्याय रूप तौ ऐसो होय । जेठे सुतकों दीजे सोय ॥
अरु लहुरो चतुरंग अपार । चाहौं ताहि देहु भूपाल ॥८७॥

इतनी सुनिकैं भूपति जबै । बज्रसैन बुलवाए तबै ॥
तबहीं भूपति कैसें कही । लेउ पितापद तुम अब सही ॥८८॥
तब कुमार बोलो करजोरि । हो महराज सुनो सु बहोरि ॥
जेठो भ्राता तात समान । ता आगें मोहि जोग न आन ॥८९॥
बिनहींकौं दीजै भूपाल । हुकम करौं तुमरो दरहाल ॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबै । अधिक प्रसन्न भए सो तबै ॥९०॥
तुरत लयो महसैन बुलाय । सो भूपति दीनो पहिराय ॥
छपनकोटि जाके दीनार । ताको स्वामी करो ततकाल ॥९१॥
दयो सेठिपद ताकों सोय । आगें और सुनो जो होय ॥
अब जानौ बज्रसेनि कुमार । नित जावै नृपके दरबार ॥९२॥
साधै हुकुम नृपतिको सोय । भूपति अधिकप्रसन्न सु होय ॥

अब जेठो महासैन कुमार । मतिको हीन सु जाति गमार ॥९३॥
बरषैंसीं बीतीं अब सोय । नृप दरबार न जावै कोय ॥
एक दिवश भूपति तब कही । बज्रसैन तुम आवौ सही ॥९४॥
जेठो भ्राता तेरो सोय । मो दरबार न आवै कोय ॥
बरषैंसीं जु बीति अब गईं । घरही मैं रहैं बैठो सही ॥९५॥
तब कुमार बोलो करजोरि । हो महराज सुनो सु बहोरि ॥
तिनकौं तौ घर काम अपार । आवत नाहिं बने दरबार ॥९६॥
मोपर हुकुम तिहारो होय । तुम दरबार रहों नित सोय ॥
इतनी सुनि करि भूपति जबै । अधिक पसन्न भए सो तबै ॥९७
तुरतहिं लयो गजराज मगाय । सो कुमरा दीनो पहिराय ॥
कुंडल कड़ा पहिराए जबै । साल दुसाला जानो तबै ॥९८॥

राज मंत्रपद ताकों दयो । सबके ऊपर सिर सुख भयो ॥
पुन्यथकी किमि किमि नहिं होय । पुन्य समान अवर नहिं कोय ॥९९॥
इस विधिसों बज्रसैन कुमार । भोगैं भोग तहां सुखकार ॥
भूप करै जु बड़ो सनमान । सौंपो राजको सबरो काम ॥१००॥
राज मन्त्रपद पायो सोय । सब पर हुकुम जु ताको होय ॥
जेठे भ्रातको राखै मान । हुकुम करै ताको परमान ॥१॥
बहतौ जानौ दुष्ट गमार । लघुसों मानै दोष अपार ॥
ऐसें रहत बहुत दिन गए । आगे सुनो जु कारन भए ॥२॥
एक दिवस जेठो जु कुमार । मनमैं कैसो करत बिचार ॥
लघु भ्राता मेरो जह सोय । सब पर हुकुम जु ताको होय ॥३॥
भूप करै ताको सनमान । वाको आदर जगमें जान ॥

जाके आगें जानो सोय। मेरी वात न बूझै कोय ॥४॥
आधी रैन बीति जब गई। निज त्रियसों तब कैसें कही॥
लघु भ्राता मेरो अब जान। जाको आदर करै जहांन ॥५॥
जा आगे जानौ अब सोय। रंकहु मोहि गिने नहिं कोय॥
सब परजा करै हुकुम प्रमान। कोई न मानै मेरी आन॥६॥
तातैं जाकौं विष दै मारि। करौं निकंटक राज सम्हारि॥
सब पर हुकुम हमारो होय। हमहींकौं पूछै सब कोय ॥७॥

चालि छंद।

तब बोली धुरंधर नारी। पिय बात सुनो सु हमारी॥
ऐसे भ्रातकों बैन उचारो। धृग जीवन जन्म तुम्हारो॥८॥
तुम्है तात समान सु जानै। तुम आज्ञा शिरपर मानै॥

ऐसी चूक कहा है सोई । तातैं बाकों बिचारत द्रोही ॥९॥
तातैं बलमा सुनि लीजै । ऐसी बात न फेरि कहीजै ॥
अब कहि सु कही तुम जोई । ऐसी कहन जोग नहिं तोई ॥१०॥
बोलो तब दुष्ट गमारी । मेरी बात सुनो बरनारी ॥
निहचैं बिष दै करि मारौं । और बात कछू न बिचारौं ॥ ११ ॥
तब बोली कैसैं नारी । पिय बात सुनौ जु हमारी ॥
वह तौ कुलदीपक जानौ । अधिको गुनवंत बखानो ॥ १२ ॥
वाके आगें जानौ सोई । तुम्हैं आँच न आवै कोई ॥
नित प्रति करौ भोग विलासी । बहतौ सु गुननकी रासी ॥ १३ ॥
तातैं बलमा सुनि लीजै । ऐसे भ्रातकों द्रोह न कीजै ॥
बोलो तब दुष्ट गमारी । मेरी बात सुनो बरनारी ॥ १४ ॥

विष दै करि मारौ सोई । करौ और विचार न कोई ॥
फिरि कैसें नारि समझावै । तासों कैसें बतलावै ॥१५॥
भ्राता मारैं मेरे कंथा । जु रि टूटै बांह तुरंता ॥
करि वैरी अकेलो पावै । बहुतै तव कोप करावै ॥१६॥
फिर जन्म धरो मेरे सांईं । ऐसो भ्रात मिलै कहुं नाहीं ॥
कछु पूरव पुन्य कमायो । ऐसो भ्राता तुम पायो ॥१७॥
तातैं बलमा सुनि लीजे । ऐसी बात न कबहूं कीजे ॥
फिरि बोलो दुष्ट जु कैसें । बरनारि सुनो तुम ऐसें ॥१८॥
बहु कहैं कहा अब होई । मारौ विष दै करि सोई ॥
तब बोली कैसें नारी । पिय बात सुनौ सु हमारी ॥१९॥
पुत्रहुको मरन जु होई । फिरि देय विधाता सोई ॥

जो भ्रात मरन कहुं होई। फिर मिलनो दुर्लभ सोई ॥२०॥
तातैं बलमा सुनि लीजै। भ्राताकों द्रोह न कीजै ॥
फिरि दुष्टने कैसें कही है। मारौं निश्चै जु सही है ॥२१॥
बोली चतुरंग जु नारी। सांई सुन बात हमारी ॥
जह बात ठीक नहिं कोई। भ्राताकों बिचारत द्रोही ॥२२॥
जो कहुं भूपति सुनि पावै। अधिको तुम्हे दंड दिवावै ॥
धन लच्छि लेय लुटवाई। अरु देशतैं देय कढ़ाई ॥२३॥
अपजस होवै जगमाहीं। जह कौन कुमति तुम्हे आई ॥
तातैं बलमा सुनि लीजै। ऐसी बात न फेरि कहीजै ॥२४॥
इस विधिसों नारि समझावै। वाके मन एक न आवै ॥
तब नारिसों कैसें कही है। हम बात सुनो जु सही है ॥२५॥

जो दिवरा साथी होई। मेरो हुकुम न पालै कोई ॥
जो होय हमारी नारी। मेरी होवै आज्ञाकारी ॥२६॥
मारौ विष दै करि सोई। नहिं कोट चिनाऊं तोही ॥
इतनी सुनिकैं तब नारी। जानै रुदन करो है भारी ॥२७॥
नैनन चलै आंसू जाके। अति सोच हृदयँ भयो ताके ॥
मनमै सु बिचारत एसैं। कौन बात करौं मैं कैसें ॥२८॥
जो मारौं दिबरै सोई। मोकौं पाप सघन अति होई ॥
अरु जो मारौंमैं नाहीं। मोकौं दोष लगावै सांईं ॥२९॥
जाकौं कौन कुमति अब आई। जाके पाप हृदय गयो छाई ॥
ऐसें वह रुदन करंती। कहुं नेक न धीर धरंती ॥३०॥
तब बोली कैसें नारी। पिय बात सुनो सु हमारी ॥

मैं पालौं हुकुम तुम्हारो। दिवराकौं बिष दै मारौं ॥२१॥
फिर मेरे बचनकों कन्थ। तुम यादि करौगे तुरन्त ॥
इतनी सुनि करिकैं कुमार। सुख पायो ताने अपार ॥२२॥
दोहा—इस विधिसौं तब दुष्टने, ताको करै उपाय ॥
और कथन आगें अबै, सुनौ सबै मन लाय ॥ २२ ॥

चौपाई।

रुदन करै अधिको बह नारि। मनमैं दुक्ख करौ सु अपार ॥
जबहीं प्रात भयो ततकाल। तहँतै नारि चली तब हाल ॥२४॥
पहुँची भोजन साला माहिं। तानै रसोई दई चढ़ाय ॥
बिष डारो व्यंजनके मझार। बिष डारै पकवान मझार ॥२५॥
बिषकी करी रसोई जबै। और सुनौ नर नारी तबै ॥

जसवल तवहीं लयो बुलाय । तासौं हुकुम करो सु बनाय ॥३६॥
देवर हैं नृपके दरबार । तिनहिं सु ल्याबौ अब ततकार ॥
इतनी सुनिकरि जसवल गयो । जाय कुमरसौं कहतो भयो ॥३७॥
भावजनै बुलवायो तोय । चलौ ढील कीजै नहिं कोय ॥
इतनी सुनिकैं तबै कुमार । चलत भयो तहँतैं ततकार ॥३८॥
सो आयो निज ग्रेह मझार । तब असनान करै सु कुमार ॥
फिर पहुंचो जिन मंदिर माहिं । श्रीजिनवरके दर्श कराहि ॥ ३९ ॥
फिर आयो निज गृह अब सोय । भावज पास पहुंचो जोय ॥
तब भावज बोली सुखकार । भोजन करि लीजै सु कुमार ॥४०॥
तबहि कुमर फिरि कैसें कही । भावज बात सुनो तुम सही ॥
मेरो भ्रात कहां अब सोय । बा बिन भोजन करौं न कोय ॥४१॥

तबहीं भावज कैसें कही । उनके तन जु बिथा कछु भई ॥
इतनी सुनिकैं तबै कुमार । भ्राता पास गयो ततकार ॥४२॥
जाय भ्रात सों कैसें कही । कौन बिथा तुम तनमें भई ॥
तुरतहि लाऊं बैद बुलाय । तुमकौं नीको लेउ कराय ॥४३॥
तबहि दुष्ट फिरि कैसें कही । अब तौ बिथा मेरी घट गई ॥
तुम भोजन सु करौ अब जाय । पीछेतैं मैं करौं सु आय ॥ ४४ ॥
भ्रात हुकुमतैं चलो कुमार । पहुंचो जाय रसोई द्वार ॥
भावज देखि दिवरकों जबै । आंसू चलैं नैनतैं तबै ॥ ४५ ॥
तब भावज सों कैसें कहीं । हमरी बात सुनो तुम सही ॥
कारन कौन भयो तुम सोय । बदन मलीन सु दीखै मोहि ॥४६॥
इतनी सुनिकैं भावज जबै । कछू जबाब न दीनो तबै ॥

चंदन चौकी दई डराय । कंचन थार परोसो आय ॥ ४७ ॥
षट रस आदिक व्यंजन जानि । तबै परोसो भोजन आनि ॥
दया अंग ताके है सोय । देखत बनो न तापै कोय ॥ ४८ ॥

छंद पद्धड़ी ।

जब ग्रास उठायो तब कुमार । भावज कर पकरो तबै हाल ॥
फिरि कहै दिवरसों तबै सोय । जे बिष भोजन मति करौ कोय ॥४९॥
तुम भ्रात करो मारन उपाय । मेरे बसकी कछु रही नाहिं ॥
इतनी सुनि करिकैं तब कुमार । उठि ठाड़ो तब हूबो सु हाल ॥५०॥
निज महलनमें तब गयो सोय । तसु नारि कहै तासों जु सोय ॥
कह मलिन चित्त बालम सु आवै । इसको मोहि भेद सुनाउ सबै ॥५१॥
मन माहिं बिचारै तब कुमार । कह भ्रात दोष भाषौं जु सार ॥

आखिर अबला यह नारि होय। छिनमें पुनि प्रघट करै जु सोय॥५२॥
तबहीं सु नारिसों कहै सोय। इसको फिरि भेद बताउं तोय॥
तुम करसु रसोई करौ त्यार। तौ मैं भोजन तब करौ सार॥५३॥
चतुरंग नारि जानी जु सोय। कछु भ्रात उपाय करो जु कोय॥
मुझ बलम बात मोसों छिपाहिं। ताको हठ फिर कछु करो नाहिं॥५४॥
जे चतुर नारि जानौ जु सोय। पति हठपर हठ नहिं करै कोय॥
असनान करे ताने जु सार। पुनि करी रसोई तबै नारि॥५५॥
तब सोधि बलीता नारि जबै। जलगालनकी विधि जान सबै॥
सो क्रिया शुद्ध जानौ सुनारि। तब करी रसोई तबै त्यार॥५६॥
तब करिकैं रसोई त्यार भई। देखौ पुन्यतनो फल कैसो कही॥
सौधर्म मुनीश्वर तहां सार। ताही बनमैं तप करत हाल॥५७॥

तिन तीन पक्ष कीनो उपास । तव छीन शरीर भयो जु तासु ॥
भोजनके कारन तवै जान । आए नगरीमैं सो महान ॥५८॥
जब दृष्टि परे मुनि अनागार । निज त्रियसों बोलो तव कुमार ॥
कारन अहार नगरी मझार । आवै जु मुनीश्वर सुनौ नारि ॥५९॥
इतनी सुनि करिकैं नारि कही । अब धन्य भाग बालम जु सही ॥
यह धन्यघरी दिन आजु सार । मुनिराज काज आए अहार ॥६०॥
इतनी सुनि करिकै तब कुमार । पड़गाहि ऋषीश्वर तहां सार ॥
तब तीन प्रदक्षन देय जोय । पुनि नवधा भक्ति करी जु सोय ॥६१॥
तब दोष छयालिस टारि सार । तब दयो हाल मुनिकों अहार ॥
फिरि जय जय शब्द जु गगनहोय । तहँ देब कहैं कैसें जु सोय ॥६२॥
अब धन्य भाग तेरो कुमार । तैं मुनि करपै कर धरो सार ॥
फिरि मुनितौ बनकौं गए सोय । तहँ ध्यानाऽरूढ़ भए सु जोय ॥६३॥

तब पीछतैं आपुन कुमार। भोजन सु करो तानैं जु सार॥
फिरि नारि सु भोजन करो जान। सो धन्य भाग निजको सु मानि॥६४॥
दोहा—इस विधिसों ऋषिराजकौं, दीनो शुद्ध अहार॥
धन्य भाग ताको सु अब, धनि जाको अवतार॥६५॥

चौपाई।

भ्राताने जो करो उपाय। ताकी यदि करै कछु नाहिं॥
अब सुखसौं तहँ रहै कुमार। आगें और सुनौ बिस्तार॥६६॥
दिन अथयो निशि जबहीं भई। फिरि तब दुष्ट नारि सों कही॥
कैसो मारो भ्राता सोय। जीवत फिरै मरो नहिं कोय॥६७॥
तबै नारि फिरि कैसें कही। हो भरतार सुनो तुम सही॥
काहू जनाइ दयो सो हाल। भोजन छांड़ि गयो ततकाल॥६८॥
जो मुझ झूंठी जानो कंत। बिषके भोजन देख तुरंत॥

तबहि दुष्ट फिरि कैसें कही। फिरिकैं मारौं वाकों सही ॥६६॥
तब बोली कैसें वर नारि। मेरे वचन सुनो भरतार ॥
कहा कुमति उपजी तुम्हे आय। क्यों अब वृथां जु पाप उपाय ॥७०॥
जाके करसों श्री ऋषिराज। लयो अहार सु धर्म जिहाज ॥
सो किसहूको मारो कंत। वह मरनो अब नाहिं महंत ॥७१॥
इतनी सुनिकरि तबै कुमार। कहत भयो सुनियो वरनारि ॥
मारौं बाय भुलै करि सोय। ताकों ढील करो मति कोय ॥७२॥

ढार अहो जगति गुरुकी।

तब बोली वरनारि, कंथ सुनो तुम सोई।
सांच कहौं अब बात, तामैं झूंठ न होई ॥
मेरे भरोसें कंथ, अब रहियो मति कोई।
मोपैतो भरतार, अब ऐसी नाहिं होई ॥ ७२ ॥

चाहैं तौ कोट चिनाउ, चाहैं सूरी धरदीजै।
चाहौं तौ भरतार, घरतैं काढ़ सु दीजै॥
इतनी सुनिकै कुमार, जानि लई मन माहीं।
मैहीं करौं उपाय, जह करने की नाहीं॥ ७४॥
दोहा—इस विधिसों भावज तबै, दिवरा लयो बचाय।
धन्य नारि जे जगतिमें, करुना तिन मनमांहिं॥ ७५॥

चौपाई।

यहतौ कथन रह्यो इस ठौर। आगे कथन सुनो अब और॥
एक दिवस जसुभद्र सु राय। बैठो तो सो सभा लगाय॥७६॥
चोर एक पकरो कुतबाल। नृपदरबार सु लायो हाल॥
तब भूपति सों कैसें कही। हो महाराज सुनो तुम सही॥७७॥
घने दिवसको तसकर सोय। मूसे नगर जानैं सब कोय॥

घने जीव मारै अधिकाय । आज पकरि पायो है ताहि ॥७८॥
इतनी सुनिकरि भूपति जबै । क्रोध करो तापर सो तबै ॥
जसवल लीने तबै बुलाय । हुकुम करो कैसें तब राय ॥७९॥
प्राण हरो जाके अब सोय । छन इक ढील करो मति कोय ॥
तब जसबल बोलो करजोरि । हो महाराज सुनो सु बहोरि ॥८०॥
तुमरे हुकुमतैं मारों सोय । पाप लगे मारेको तोय ॥
इतनी सुनिकै भूपति कही । होय पाप तौ छांड़ौ सही ॥८१॥
तब जसबल बोलो करजोरि । हो महाराज सुनो सु बहोरि ॥
तौ तुमहीं कौं पाप अपार । न्याउ नहीं नृपके दरबार ॥८२॥
फिरि ऐसोई काम कराय । मूसि नगर जिय घात कराय ॥
दोऊ विधि तुमहींकौं पाप । सोई करो हुकुम जो आप ॥८३॥

जोगीरासा ।

इतनी सुनि करि भूपति जबहीं मनमें विरकित होई ॥
धृग लछिमी यह राज सु जानौ जामें सार न कोई ॥
मारौंतौ मोहि पाप जु लागै छाडैं अपजस होई ॥
जहतौ राज नरकगति देई जामें फेर न कोई ॥ ८४ ॥
किसको पुत्र पिता अब किसको किसके बाँधव भाई ॥
सबरे कुटुमकों पाप कमावै नर्क अकेलो जाई ॥
ऐसो राज न मोकों चहियें भूमों चतुर्गति माहीं ॥
राज करौंगो मुकति नगरको भूपतिके चित आई ॥ ८५ ॥
जेठे सुतको राज सु दीनो नृपने नीति विचारी ॥
सब जीवनसों मागि क्षमा अब पहुंचो अरनि मझारी ॥
श्री सौधर्म मुनीश्वरके अब जाय चरन शिर नाई ॥

श्री मुनिवर मोहि दीक्षा दीजो तासों पार लगाई ॥ ८६ ॥
तव मुनिवर फिरि कैसें वोले धनि भूपति जगमाहीं ॥
आछी अंतमें तैंने विचारी तुम सम और जु नाहीं ॥
सप्त दिवस तेरी आव सु माहीं वाकी रही है सोई ॥
इतनी सुनि करि भूपति जवहीं अति ही विरक्त होई ॥ ८७ ॥

चौपाई ।

केस लोंच कीने तव राय । नगन दिगम्बर भए वनाय ॥
पंच महाव्रत धारे सार । भयो मुनीश्वर अरनि मझार ॥ ८८ ॥
जाव जीव सन्यास सुधार । त्योगो चरि प्रकार अहार ॥
अंत समाधि मरन करि सोय । तजे प्रान शुधभावन होय ॥ ८९ ॥
पंचम स्वर्ग लयो अवतार । भयो देवपद ताकों सार ॥
तहँके सुख भोगै अब सोय । कहँ लग ताको वरनन होय ॥ ९० ॥

दोहा—इस विधिसों नृपराजकों, भयो देवपद सार ॥
और कथन आगें अबै, सुनो सबै विस्तार ॥६१॥

चौपाई ।

अब भूपति सुत जानौ सोय। नाम जसोमति ताको होय ॥
सोतौ राज करै सुखकार। आगें और सुनो विस्तार ॥६२॥
मंत्री पुराने जानो सोय। बज्रसैन, राखे नहिं कोय ॥
सो घर बैठि रहो सु कुमार। कबहूं न जाय नृपति दरबार ॥६३॥
एक दिवस बह दुष्ट गँमार। गयो हतो नृप सभा मझार ॥
भूपतिसैं तब कैसे कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥६४॥
मेरो लघु भ्राता भूपाल। आवन पाय नहीं दरबार ॥
बहतौ राज बिनाशन हार। निहचैं जानौ तुम भूपाल ॥६५॥
जौ अब हुकुम तिहारो होय। बाको करौं उपाय-जु सोय ॥

तवहीं भूपति कैसें कही । चाहौ सो कीजौ अव सही ॥१६६॥
तोहि करो मंत्री मैं सही । कहि दीनी सो भूपति यही ॥
इतनी सुनि करिकैं सु कुमार । मनमें आँनद वढ़ो अपार ॥१६७॥
फिरि आयो निज मंदिरमाहिं । मनमें कैसें कहै वनाय ॥
अवतौ मौसैं नृप कहि दई । ताके मन कछु चिंता नहीं ॥१६८॥
इस विधिसौं जानौ अव सोय । रहै निसंक महा सुख होय ॥
वहुत करो ताको सु उपाय । आगें और सुनो मनलाय ॥१६९॥
एक दिवस वज्रसैन कुमार । सोवत तो निज महल मझार ॥
फाटक वंद दए करवाय । आगें और सुनो मनलाय ॥२००॥

ढार. अहोजगति गुरुकी ।

आधी रैनके माहिं जागो दुष्ट गमार ।
सौतौ अव मनमाहिं कैसे करत विचार ॥

ताके महल मझार देउं सु अगिन लगाई।
तासों जरै ततकाल दाउ लगो मेरो आई॥ १ ॥
तहँतै उठो ततकाल तासु महलपै जाई।
दरवाजेतैं धाय तानै अगिनि लगाई॥
फाटिक जरे ततकाल पैठी महल जु सोई।
धूमके उठे पहार अगिन प्रवेश जु होई॥ २ ॥
यहतौ कथन इसथान रहो है सुनो नरनारी।
अब सुरलोक मझार सुनियौ चित्त विचारी॥
प्रथम स्वर्गके माहिं हरि बैठो दरवारा।
अवधिज्ञान करि सोय इंद्र करै सु विचारा॥ ३ ॥
देवनसों सुरराय कैसें कहें समझाई।
वह बज्रसैन कुमार दान दयो मुनिराई॥

ताको भ्राता सोय मारन हेत उपाई ।
सोवत है इह जान अगिन दई सु लागाई ॥ ४ ॥
जो वह जरै कुमार प्रान तजै सु वनाई ।
तौ मुनिकौं आहार फिरि देवै कोउ नाहीं ॥
दान की महिमा जाय फिर जु रहै नहिं कोई ।
तातै लेहु बचाय मरन न पावैं दोई ॥ ५ ॥
इन्द्र हुकुमतैं देव चालो सु ततछन धाई ।
कूदो महलमैं सोय कुमर पास तब जाई ॥
सुरनै झटकी बांह आप गुपत ह्वै जाई ।
कुमर त्रिया अब दोय तहँ जु उठे भहराई ॥ ६ ॥
देखैं दृष्टि पसारि चारौ ओरतैं सोई ।
धुअँनके उठे पहार अगिन प्रचंड जु होई ॥

जित चितवै तित सोथ गैल रही कहुं नाहीं ।
तब बोली बरनारि भई कुमौति जु साँईं ॥ ७ ॥
तब बोलो सु कुमार नारि सुनो तुम सोई ।
मनमें धीरज धारि चिंत करो मति कोई ॥
जो आयो है काल तौ अब कौन उपाई ।
उरमें जपि नवकार और सरन कोउ नाहीं ॥ ८ ॥
देव सुनी यह बात धन्य कहै तब सोई ।
धनि धीरज अब तोय तो सम अवर न कोई ॥
बज्र दंडसों हाल फोरि सफील जु डारी ।
काढ़ि दए सो देव तब दोनों नरनारी ॥ ९ ॥
गहने पहिरें नारि तहँ जु बचे अब सोई ।
अरु लछिमी सु अपार सबही भस्म जु होई ॥

इस विधिसौं सुर राय काढ़ि दए अब दोई।
धन्य दान जगमाहिं तासम और न कोई ॥ १० ॥

छंद।

अब आधी रैनिके माहीं। दोउ पंथ चले तब जाहीं ॥
जो करम करै सो होई। जाको मेटनहार न कोई ॥ ११ ॥
वह कोमल अंगन नारी। सेजन की सोवन हारी ॥
धूप देखि बदन कुमिलाई। पाय प्यादे चली सु जाई ॥ १२ ॥
सो कछुक दिननके माहीं। पहुँचे सु द्रोन बन जाई ॥
बनहीं में रहैं अब सोई। बैठे नरनारी दोई ॥ १३ ॥
कुमराको बदन कुमिलानो। आंखिनतैं नीर बहानो ॥
समझावै कैसें नारी। पिय बात सुनो सु हमारी ॥ १४ ॥
संपति जो भस्म भई है। तातैं रुदन करो जु सही है ॥

लछिमी जह चंचल होई । इसको पतियारो न कोई ॥ १५ ॥
छिनमें यह भूप बनावै । छिनमें यह रंक करावै ॥
तातैं बलमा सुनि लीजै । लछिमीको सोच नहिं कीजै ॥ १६ ॥
तुम हातनकी जु कमाई । फिरि अनि मिलै मेरे सांई ॥
इस विधिसों नारि समझावै । कुमाराकौं धीर्य बँधावै ॥ १७ ॥
फिरि बोली कैसें नारी । पिय बात सुनो जु हमारी ॥
कंकन मो करको लीजै । गहने नगरीमें धरीजै ॥ १८ ॥
भोजन सांमा मेरे कंत । अब लावौ जाय तुरंत ॥
कंकन लै चालो कुमारा । पहुंचो नगरीके मझार ॥ १९ ॥
कंकन धरो गहने जबहीं । लाओ भोजन सांमा तबहीं ॥
असनान करो तब नारी । पुनि करी रसोई त्यारी ॥ २० ॥
जल गालनकी विधि जानै । ईंधन सोधो पुनि ताने ॥

कियवांन चतुर वह नारी। सो करी है रसोई त्यारी ॥ २१ ॥
किरिकैं तैयार भई है। भरताकौं टेर दई है ॥
तव पुन्य तनो फल सोई। देखौ कैसो ततछिन होई ॥ २२ ॥

ढार ते गुरु मेरे उर वसौ।

दान वड़ो संसारमें दान करौ नर नारि।
दान जगतिमें सार है जासौं होय भवपार ॥ टेक ॥२३॥
पहिताश्रव मुनिवर जहां ताही वनके माहिं।
दुद्धर तपकरते जहां छीन शरीर वनाय ॥दान०॥२४॥
पांच पांच उपवासजी कीने ते मुनि राय।
कारन मुनि आहारके पहुंचे नगर सु जाय ॥दान०॥२५॥
सप्तदिवसलौ नगरमें आयो है अंतराय।
नितप्रति मुनि फिरि जात हैं और सुनौ मनलाय ॥दान०॥२६॥

अष्टम दिन लागो जबै भूप सुनी यह बात ।
करुना बह मनमें करो कैसे तब पछितात ॥दान०॥२७॥
ऐसो कोउ न नगरमें आहार देय शुधभाय ।
नितप्रति मुनि फिरि जात हैं आवत है अंतराय ॥दान०॥२८॥
अबतौ आजुमें देंउ गो मुनिबरकौं पड़गाय ।
दोष छ्यालिस टारिकैं आहार देउं शुधभाय ॥दान०॥२९॥
इतनी कहिकैं भूपनैं डौंड़ी नगर दिवाय ।
हिंसक जिय है नगरमें भूपदए कढ़वाय ॥दान०॥३०॥
द्वारा पेखन नृप करो मनबचतन करि राय ।
पुन्य बिना मुनि ना मिलै और सुनो मनलाय ॥दान०॥३१॥
बनतैं मुनिवर डगरियो करुना निधि प्रतिपाल ।
ईर्यापथ सोधत चले श्रीगुरु दीन दयाल ॥दान०॥३२॥

दृष्टि परें तब कुमरके हरषों है मनमाहिं।
निज त्रियसों कैसें कही आवत हैं मुनिराय ॥दान०॥२३॥
तबै नारिं कैसें कही सुनों वलम सुखकार।
धन्य भाग हमरो अबै आए दीन दयाल ॥दान०॥२४॥
मुनिवरकों पड़गाइयो दीजे शुद्ध अहार।
धन्य घरी दिन आजुकों मुनिबर आए द्वार ॥दान०॥२५॥
इनतनीं सुनिकें कुमरनैं मुनिवरकों पड़गाहि।
नबधा भक्ति तबै करी करिकैं तब सुध भाय ॥दान०॥२६॥
दोष छयालिस टारिकैं दीनो शुद्ध अहार।
देब दुंदभी तब बजे वरषें फूल अपार ॥दान०॥२७॥
जय जय शब्द जु गगनमें देव करैं जैकार।
धन्य भाग तेरो कुमर मुनिकों दयो आहार ॥दान०॥२८॥

मुनिवर तौ बनकौं गए करुनानिधि ते सार।
पीछैं तब भोजन करो दोनों हैं नर नारि ॥दान०॥३९॥
इस विधिसौं जब कुमरने मुनिकौं दयो आहार।
ऋषिकरपै कर जब धरो धनि जाको अवतार ॥दान०॥४०॥

चौपाई।

भूपकान तब परी अवाज। देव दुन्दभी बाजैं आज॥
भूपति जानी मनमें सार। काहू मुनिकौं दयो अहार ॥४१॥
जय जय शब्द गगनमैं होय। मेरो भाग भयो नहिं कोय॥
जसबल तुरत दए पठवाय। देखौ कौन तलास कराय ॥४२॥
आयो देखि जब जसबल कही। हो महराज सुनो तुम सही॥
परदेशी नरनारी दोय। बैठे बनमैं ते अब सोय ॥४३॥
तिन श्रीमुनिकौं दयो अहार। बरषे हैं तहँ फूल अपार॥

इतनी सुनि करिकैं भूपाल । मनमें करत विचार सुहाल ॥४४॥
मेरे नगरमें फिर फिर गए । काहू भाग न ऐसे भए ॥
धनि वह पुन्यवंत नरनारि । चलिकैं मिलाप करौंमें सार ॥४५॥
डौंड़ी नगरमें दई दिवाय । परजा लीनीं सबै बुलाय ॥
मंत्री आदि जुरे परधान । चलो मिलनकौं भूपति जान ॥४६॥

छंद पद्धड़ी ।

हय गय रथ वाहन चले सार । चवरँग सैन लीनी सु लार ॥
अरबी सुतरी बाजैं महान । फहरात चलैं आगें निशान ॥४७॥
इसभांति नृपति चालो खुसाल । पहुंचो वनमें तसु पास हाल ॥
गजकी चिक्कार सुनी सु जबै । सो डरी नारि ताकी सु तबै ॥४८॥
सो परी पियाके गोदमाहिं । तसु बलम कहै तासों बनाय ॥
मुनिराज अहार दयो जु सोय । चिंता हमकौं तौ कहा होय ॥४९॥

सो जानी नृपने तवै सार। मो सैन देखि डरपी सु नारि॥
फिरि जसबल दयो आगें पठाय। आवैं जु मिलनको तुम्है राय॥५०॥
इतनी सुनि करिकैं तब कुमार। मनमें आनंद बढ़ो अपार॥
अब सैन सहित पहुंचो सु राय। सब प्रजा संगताके सु जाय॥५१॥
गजतैं उतरो तब भूप हाल। विततैं आयो तबहीं कुमार॥
भूपति मिलाप तब करो सार। चितमे हरषो तबहीं कुमार॥५२॥
कैसैं मिलाप तब भयो सोय। मानो जन्म मित्र जे मिले दोय॥
तबहीं कुमारसौं भूप कही। तुम धन्य जन्म अवतार सही॥५३॥
तैं मुनिकरपै कर धरो सोय। तो सम नर अब दूजो न कोय॥
फिरि गजपर बैठारो कुमार। चंडोल चढ़ी ताकी सु नारि॥५४॥
नगरीमैं पहुंचो तवै जाय। निज महलले गयो तवै राय॥
पहिराय दयो तबहीं कुमार। वस्त्रा जु भरन जानौ अपार॥५५॥

सनमान करो अधिको बनाय। षटरस भोजन दीने जिमाय॥
अरु द्वादश नगरीं दईं राय। न्यारे जु महल दीने कराय॥५६॥
देखो मुनि दान तनो प्रभाय। तबकुमर दुक्ख सबही पलाय॥
इस भांति कुमर जानो जु सार। नित भोग विलाश करै अपार॥५७॥
यातैं नर नारि जु सुनो कान। वित माफिक दीजै सदा दान॥
इस भांति कुमर पुरद्रोन माहिं। सुखसों निवसे कछु दुक्ख नाहिं॥५८॥
दोहा—इसविधिसों पुनि कुमर तब, द्रोन नगरमें सार।
भूप करैं सनमान नित, भोगै सुक्ख अपार॥५९॥

चौपाई।

यह तो कथा रही इस ठांय। आगें और सुनो मनलाय॥
कौंसलदेश बसे सुभ सार। पोदनपुर नगरी सुखकार॥६०॥
सो नगरी महिमा को कहै। स्वर्गपुरी मानौ वह लहै॥

ताही नगर इक सेठि सुजान । मकरध्वज तसु नाम बखान ॥६१॥
पूरब पुन्य उदै सुखकार । लछिमीको ताके नहिं पार ॥
सूर्यकला ताकें बर नारि । मानो सूरजकी उनहारि ॥६२॥
तासम रूप अवर नहिं कोय । मानो देवबधू जह होय ॥
शील धुरंधर गुनकी खानि । पतीव्रता बह नारि बखानि ॥६३॥
ताको सोर भयो जग माहिं । तासम रूपबती कोऊ नाहिं ॥
इक दिन ऐसो कारन भयो । सेठि तबै परदेशन गयो ॥६४॥
कारज बनिज गयो गुनवान । आगें और सुनो व्याख्यान ॥
इक बिद्याधर ठगई करी । सेठिरूप कीनो तिस घरी ॥६५॥
नारि छलनके कारन सोय । पोदनपुरकौं रमतो होय ॥
ताके महलन पहुंचो जाय । तासों कैसें तब बतलाय ॥६६॥
मैं आयो तेरो भरतार । क्यों नहिं आदर करै सु नारि ॥

नारि हु जानी निश्चै सोय। आयो बालम मेरो होय ॥६७॥
तौलों नारि पुन्यतैं सार। आयो सेठि तबहि ततकार ॥
दोनों ठाड़े एक स्वरूप। मानो सांचे ढरे अनूप ॥६८॥
दोनोंमैं अब झगड़ो होय। ताके आंगन ठाड़े दोय ॥
बहतौ कहै मेरी अब नारि। बह कहै मैं याको भरतार ॥६९॥
नारि देखि अति विस्मय भयो। कह बिधना मोकों निरमयो ॥
एक स्वरूप खड़े जे दोय। कह जानै मेरो पति कोय ॥७०॥
शीलवती नारी सुखकार। कहति भई तिनसों बचसार ॥
दोनो रहो नगरमें सोय। जौलों तुमरो न्याव न होय ॥७१॥
न्याउ निबेरे जब भूपाल। सो होसी मेरो भरतार ॥
दोनो महलतैं दए कढ़ाय। आगें और सुनो मनलाय ॥७२॥
नारि चली निजघरतैं सोय। संग लए तब तानें दोय ॥

जब पहुंचो नृपके दरवार। खैंचिकरी ताने सु पुकार ॥७३॥
हो महराज अरज सुनि लेउ। मेरी अरजी चितमें देउ ॥
एक स्वरूप खड़े जेदोय। इनमें मेरो पति है कोय ॥७४॥
मेरो न्याव करौ तुम भूप। न्यायवंत तुम अधिक अनूप ॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबै। मंत्रिनसौं बोलै पुनि तबै ॥७५॥
जाको न्याउ करौ अब सोय। छिन इक ढील करौ मतिकोय ॥
इतनी सुनि करि मंत्रिन कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥७६॥
एक स्वरूप खड़े जे दोय। तिल तुस इनमें फेर न कोय ॥
दैव गती जानी नहिं जाय। हमहूंतें जह होय न न्याय ॥७७॥
चाहौं तहँ निमटावै जाय। हमरे ध्यान न आवै राय ॥
तबै नारि फिरि कैसें कही। हो महराज सुनो तुम सही॥७८॥
जो तुमपै जह न्याव न होय। जसबल संग सु दीजै मोय ॥

संग जांय मेरे जे दोय । तासों सकती करैं न कोय ॥७६॥
अंत न्याउ लेहौं निमटाय । हो महराज सुनो मनलाय ॥
इतनी सुनिकैं भूपति कही । जसवल संग जु दीजे सही ॥८०॥
चलति भई तहँतैं सो नारि । देशन देश फिरै दुख भार ॥
जहां जाय तहँ न्याउ न होय । न्यायनिपुन दीपै नहिं कोय ॥८१॥
वहुत बात को कहै वढ़ाय । जाने मझाए वांवन राय ॥
न्याउ भयो ताको नहिं कहीं । रुदन करै अधिको तव सही ॥८२॥
फिरि मनमें तिय करो विचार । द्रोन नगर भूपति दरवार ॥
तापर में जैहौं अव सोय । जौ वाहूपै न्याउ न होय ॥८३॥
जौ नहिं न्याव करै भूपाल । तौ मै प्रान तजौं ततकाल ॥
चलति भई तहँतैं अव जोय । द्रोन नगरमैं पहुंची सोय ॥८४॥
जव पहुंची नृपके दरवार । खैंचिकरी तानै सु पुकार ॥

हो महराज अरज सुनि लेउ । हमरी अरजी चितमें देउ ॥८५॥
एक स्वरूप खड़े जे दोय । इनमैं मेरो पति है कोय ॥
मैं मझियाए बावन राय । मोकौं पति दीजै जु मिलाय ॥८६॥
इतनी सुनि करि भूपति जबै । डौंड़ी नगर दिवाई तबै ॥
सब नगरी लीनी बुलवाय । मंत्री आदि जुरे सब आय ॥८७॥
मंत्रिनसौं तब भूपति कही । न्याउ करौ जाको अब सही ॥
तब मन्त्री बोले करजोरि । हो महराज सुनो सु बहोरि ॥८८॥
सहज न्याव जाको है नाहिं । दैव गती जानै कोई नाहिं ॥
बात न्यायकी होती राय । सोजाती किमि बावन राय ॥८९॥
तिनपै भयो न्याउ जह नाहिं । अचरज बात कही नहिं जाय ॥
तातैं भूप सुनौं तुम सोय । हमहूंतैं जह न्याउ न होय ॥९०॥
इतनी सुनिकैं नारी जबै । रुदन करै मनमैं बहु तबै ॥

मरन भयो मेरो अब सोय। काहूँतैं जह न्याव न होय ॥६१॥
इतनी सुनिकरि बोलै राय। वज्रसेनिकौं लेउ बुलाय॥
बाके बुतैं जु निबटै सोय। तौ अब सुजस हमारो होय ॥६२॥
जसबल तुरत दयो पठवाय। सो कुमारकों लायो जाय॥
देखत सभा उठी हरषाय। सिंहासन लीनो बैठाय ॥६३॥

चालि छंद।

तब भूपति बोले कैसें। सुन कुमर बात अब ऐसें॥
जह दीजै न्याव निमटाई। होय सुजस तुम्हारो भाई ॥६४॥
हमरो इतनो जस होई। वाके राजमैं निमटो सोई॥
तब कुमर कहैं फिरि कैसें। महराज सुनो तुम ऐसें ॥६५॥
जह तुच्छ न्याव है सोई। सो तौ निमटै नहिं कोई॥
जो कहुं अब दीरघ आवै। तौ कौन ताहि निमटावै ॥६६॥

इतनी सुनिकैं तब राई। मनमैं बहुतै सुख पाई ॥
तब भूपतिके मन आनी। जह न्याव करै जु निदानी ॥९७॥
कुमरानै घड़ा मगवायो। सो तौ दरबार धरायो ॥
तब बोलो कैसें कुमार। दोनो बात सुनो अधिकार ॥९८॥
जो बैठे घड़ाके माहीं। तहीकी नारि बनाई ॥
इतनी सुनिकैं ठग जबही। आनंद करो मन तबहीं ॥९९॥
अब नारि मिली जह मोई। निहचैं करि जानो सोई ॥
तब सेठि कहैं मनमाहीं। अब नारि मिलै मोहि नाहीं ॥३००॥
फिरि विद्याधरने जबहीं। तुछ रूप जु कीनो तबहीं ॥
तब बैठो घड़ाके माहीं। देखैं नृप चित्त लगाई ॥१॥
तब कुमरा जानी सोई। जहतो ठग विद्या होई ॥
फिरि तासों कैसें कही है। कहि आव घडातैं सही है ॥२॥

हम जानी नारि तिहारी। ऐसे कुमराने उचारी ॥
सो लयो है घड़ातैं कढ़ाई। ताकी मुसकैं चढ़वाई ॥ ३ ॥
खंभासों खैंचि बंधाई। ताकौं बहु मारु दिवाई ॥
विद्याभाजी पुनि तबहीं। ठग रहि गयो ठाड़ो जबहीं ॥ ४ ॥
तहँतैं तब काढ़ि दयो है। तब सेठि बुलाय लयो है ॥
तब कुमरा कैसें कही है। लेउ नारि तिहारी सही है ॥ ५ ॥
नारीसों कहै समझाई। तेरो न्याव भयो कै नाहीं ॥
तब नारि कहै पुनि कैसें। कुमरा सुन वचन जु ऐसें ॥ ६ ॥
अवतार धन्य है तेरो। भरतार मिलायो मेरो ॥
तैनें मेरो शील रखायो। तैने जु न्याव निमटायो ॥ ७ ॥
तियकंथ मिले अब दोई। तहँतैं जु चले तब सोई ॥
सब कहत सभा नरनारी। जाको मात धन्य अवतारी ॥ ८ ॥

तब भूप कहै मनमाहीं। कैसें जु बिचार कराहीं॥
जह न्यायबंत अधिकारो। जातैं राज चलै सु हमारो॥ ९॥
तुरतहिं गजराज मगायो। कुमरा असवार करायो॥
कानन कुंडल पहिराए। हातनमैं कडा डरबाए॥ १०॥
गलमैं गजमोतिन माला। पहिराए साल दुसाला॥
मंत्रीपद ताहि दयो है। सबमैं शिरमौर भयो है॥ ११॥
सब राज काजको भार। सौंपो ताकौं भुअपाल॥
बहुत बात को कहै बढ़ाई। दयो बांटि राज चौथाई॥ १२॥
देखौ दान तनो फल सोई। कैसो जो ततछन होई॥
तातैं नरनारि सुनीजे। नित दान चतुर्विधि दीजे॥ १२॥
जह दान समान न कोई। जासो जन्मसुफल अबहोई॥
सुरगादिकके सुख पावै। अनुक्रम शिवपुरको जावै॥ १४॥

सोरठा—सुन तातैं नर नारि, दान चतुर्विधि दीजिये।
भव भव सुखदातार, इस भवकों जस लीजिये॥ १५॥

दोहा—राज मन्त्र पद कुमरकों, दयो तबै भूपाल।
और कथन आगें भविक, सुनो सबै नरनारि॥ १६॥

चौपाई।

यह तौ कथा यहांई रही। अबतौ धारापुरमै गई॥
राज करै सु जसोमति राय। मंत्री है महासैन बनाय॥ १७॥
ताके मंत्र थकी अब सोय। राज चौथाई रहो न कोय॥
दाब्यो समीपी राजन आन। आगें और सुनो व्याख्यान॥ १८॥
एक दिवस भूपति जह कही। हो महसेनि सुनो तुम सही॥
लीजै सैन सबहि सजबाय। अरि बाढ़ै तिन मारौ जाय॥ १९॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबै। सैन सजाई तानै तबै॥

हय गय रथ बाहन संजबाय । चलो तहाँतैं कोप कराय ॥ २० ॥
जब रनभूमि पहुंचो जाय । कोपो अरि तहँतैं सु बनाय ॥
जुद्ध भयो तिनसों अब सोय । पुन्य बिना सु विजय नहिं होय ॥२१॥
बैरी दाव तब कीनो जबै । लूटी सैन ताकी पुनि तबै ॥
हय गज रथ बाहन सु बनाय । ते लीने सबही जु छुड़ाय ॥ २२ ॥
आयो भजि तबहीं सु कुमार । सो पहुंचो नगरीके मझार ॥
पाई खबरि भूपतिने जबै । सो दरबार बुलायो तबै ॥ २३ ॥
कोप करो नरपतिने सोय । मेरो राज दीनो सब खोय ॥
तुरतहिं गर्धव लयो मगाय । तापै दयो महसैन चढ़ाय ॥ २४ ॥
अरु मुख कारो कीनो जबै । बहुत दंड दीनो सो तबै ॥
फिरि सब नगरी माहिं फिराय । ताके आगें ढोल बजाय ॥ २५ ॥
फेरि देशतैं दयो कढ़ाय । धन लछिमी सब लई लुटाय ॥

तब बोली ताकी बरनारि । मेरे वचन सुनो भरतार ॥२६॥
मारो भ्राता तुम अब सोय । कैसो राज निकंटक होय ॥
मैं बरजे मानी नहिं कोय । ताको फल भुगतो अब सोय ॥२७॥
तातैं सुनो सबै नरनारि । बैर भाव छाडौं दुखकार ॥
समता भाव गहो अब सोय । तासौं पुन्य बढ़ै बहु कोय ॥२८॥
दोहा—कुमर दयो कढ़वायकैं, लक्ष्मी लई लुटाय ।
और कथन आगैं अबैं, सुनो सबै मनलाय ॥२६॥

चौपाई ।

एक दिवस भूपति दरबार । बैठो तो सो सभा मझार ॥
एक जौंहरी लयो बुलाय । घने दिननको बिरध बनाय ॥३०॥
तासों भूपति कैसें कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥
किस विधि राज चलै हम सोय । ताको भेद सुनाबहु मोय ॥३१॥

तवहिं बिरध फिरि कैसें कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥
जो आवै बज्रसेन कुमार। तौ तुम राज चलै सुखकार ॥२२॥
तबही भूपति कैसें कही। बंहतौ अगिन जलायो सही ॥
सो कहतैं आवै अब सोय। मैं नीकें करि बूझौं तोय ॥२३॥
तबै जौंहरी कैसें कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥
पुन्यवंत नरकों अब सोय। संकट दुख व्यापै नहिं कोय ॥२४॥

सवैया तेईसा।

पुन्य थकी महराज सुनो अब पावकतें निहचैं जल होई।
पुन्य थकी श्रीपाल सुनो अब सागर पार भयो तरि सोई॥
पुन्य थकी महराज सुनो अरु गजको ग्राह नहीं भय होई।
पुन्य थकी महराज सुनो अहिके मुखतें पुनि अमृत होई॥२५॥
पुन्य थकी महराज सुनो बंनतैं नगरी पुनि होय निदानो।
पुन्य थकी महराज सुनो

पुन्य थकी महराज सुनो पुनि घर घर ताको आदर जानो ॥
पुन्य थकी महराज सुनो अब दुर्जनतैं वह सज्जन जानो।
तातैं सुनो महराज अवै सो पुन्य बड़ो जगमें सु बखानो ॥३६॥

चौपाई।

पूरब पुन्य करो सु कुमार। जरो नहीं सो अगिन मझार ॥
सो तौ द्रोन नगरके माहिं। मंत्रीपद राजाको जाहि ॥३७॥
तबहीं भूपति कैसें कही। तुमने कैसें जानी सही ॥
तबै बिरध बोलों करजोरि। हो महराज सुनो सु बहोरि ॥३८॥
त्रिय तौ एक पुरुष दो जानि। ताको न्याव पड़ो सो आनि ॥
काहूँ निमटायो नहिं जाय। ताने मझाए बावन राय ॥३९॥
तुमहूंपै वह आई सही। तुम परन्याव जु निमटो नहीं ॥
पहुंची द्रोन नगरके माहिं। वज्रसेनि दीनो निमटाय ॥४०॥

सो जस फैलो सब जग माहिं। तब हमने जानी जहराय ॥
इतनी सुनि करि भूपति जबै। मनमैं बिचार करै सो तबै ॥४१॥
जो काहूकों पठऊं सोय। तौ वह आवन को नहिं कोय ॥
तातैं मैही ल्यावन जाय। सो कुमारकों लाउं बुलाय ॥४२॥
तुरतहिं सैन लई सजवाय। हय गय रथ वाहन सु बनाय ॥
चलत भयो तहँ तैं अब सोय। दिनअरुरातिगिनेनहिंकोय ॥४३॥
चलत चलतजबकछु दिन गए। द्रोन नगरमे पहुंचत भए ॥
ऐसी खबरि कुमर तब पाय। आवत लेन तुम्हे सो राय ॥४४॥
इतनी सुनि कुमारने कही। मुख नहिं देखों नृपको सही ॥
लौटि जाय निज घरकों सोय। जियतमिलापनहमसें होय ॥४५॥

अडिल्ल।

इतनी सुनिके नारि कहै बच सार हो। ऐसी कहनी जोग नहीं भरतार हो ॥

आवै बैरी ग्रेह पहुनो है सही । ऐसी कहौ न बात नारि ऐसैं कही ॥४६॥

चौपाई ।

घर आयो तुमरे भूपाल । ताखु करौ सनमान सु हाल ॥
धन्य नारि जे हैं जग माहिं । ऐसी पतिकों सीख दिवायँ ॥४७॥
इतनी सुनिकैं तबै कुमार । नृप स्वागतकों निकसोद्वार ॥
आदर बहुत करो सनमान । षटरस भोजन बीरा पान ॥४८॥
तबहीं भूपति कैसें कही । कुमर बात तुम सुनियों सही ॥
चूक माफ हमरी अब होय । चालौ देश आपने सोय ॥४९॥
तबै कुमर फिरि कैसें कही । हो महराज सुनो अब सही ॥
धारापुर नगरीके माहिं । जीवत तौ चलनेको नाहिं ॥५०॥
तबही भूपति ऐसें कही । भो कुमार सुनियों तुम सही ॥
जो तुम अब नहिं चलौ कुमार । तौ मैं प्रान तजों तुम द्वार ॥५१॥

तब बोली कैसें बरनारि । मेरे बचन सुनो भरतार ॥
अब तौ चलौ देशको कंत । ढील करो मति चलो तुरंत ॥५२॥
इतनी सुनिकै तबै कुमार । चलनेको तब करो करार ॥
भूपतिके दरबार सु जाय । कहत भयो नृपकों शिरनाय ॥५३॥
जो देवौ अब आज्ञा मोय । तौ मैं जाउं देशकों सोय ॥
मोहि लेन आए भूपाल । तातैं दीजे आज्ञा हाल ॥५४॥
तबही भूपति कैसें कही । कुमर बात तुम सुनियो सही ॥
अब जु कही सु कही तुम सोय । फिरि ऐसी कहनो नहिं कोय ॥५५॥
तब बोलो कैसें जु कुमार । हो भूपति मेरे हितकार ॥
एक वार तौ जाऊं सोय । फिरि आऊं तहँ रहौं न कोय॥५६॥
तब भूपति नैं जानी सही । अब कुमार रहनेको नहीं॥
जौ हठ करि राखौं अब सोय । निहचैं भंग प्रीतिमें होय॥ ५७॥

आज्ञा दीनी तब भूपाल । जावौ देश आपने हाल ॥
भूपति दीनो तब पहिराय । बस्त्राऽभरन महा सुखदाय ॥५८॥
चउरँग सैन दई तब भूप । हय गय रथ बाहन जु अनूप ॥
फिरि आयो निज ग्रेह मझार । चलनेको तब भयो तयार ॥५९॥
तवहीं पंडित लयो बुलाय । घरी मुहूरत दिन सुधवाय ॥
चलत भयौ तहँतैं जु कुमार । चतुरँग सैन सजी सुखकार ॥६०॥

पद्धड़ी छंद ।

हय गय बाहन रथ चले सार । असवार चलैं ताकी सु लार ॥
गज ऊपर अंबारी धराय । तापर असबार भयो सु जाय ॥६१॥
अन नारि चढ़ी चंडोल सार । इस भांति चलो तहंतैं कुमार ॥
अरवी सुतरी बाजैं महान । फहरात चले आगें निशान ॥६२॥
ठाड़े नकीब बोलैं जु सार । ऐसें नृपसंग चलो कुमार ॥

बहु बात कहै पुनिको बढ़ाय । सो चलत भए तहँतैं सु राय ॥६३॥
अब चलत चलत कछु दिन विताय । धारापुरमें पहुंचे सु जाय ॥
नगरीमें खबरि भई सु जाय । पुरतैं निकसे सब हर्ष लाय ॥६४॥
आगें ह्वै लीनो तब कुमार । आनंद बढ़ो तिनको अपार ॥
निज महल लै गयो तबै राय । सनमान करो तिनको बनाय ॥६५॥
पहिरायो नृपने तब कुमार । फिरि मंत्रीपद दीनो जुसार ॥
अब दान तनो फल तरु सुजान । कैसो जो ततछन फलो आन ॥६६॥
तातैं नरनारि सुनो जु सबै । नित दान चतुर्विधि देहु अबै ॥
इस भांति कुमर जानो जु सार । आयो निज नगरीके मझार ॥६७॥

दोहा—इस विधिसों जु कुमार अब, आयो नगर मझार ।
और कथन आगों भविक, सुनो सबै नर नारि ॥ ६८ ॥

चौपाई ।

नृप महलनतैं चलो कुमार । सो आयो निज ग्रेह मझार ॥
सूने घर देखे तहँ जाय । बसैं काग तिनमे तहँ आय ॥६९॥
भावज भ्राता देखे नाहिं । अधिक करी चिंता मनमाहिं॥
कही नृपति सों तानै जाय । हो महराज सुनो मनलाय ॥७०॥
सूने मंदिर हमरे भए । भावज भ्रात कहां मो गए ॥
तबहीं भूपति ऐसें कही । कुमार बात तुम सुनियों सही ॥७१॥
तेरो भ्राता पापी होय । काढ़ि जु दयो देशतैं सोय ॥
छपन कोटि तुम्हरे दीनार । सो लेवो राखो भंडार ॥७२॥
तब कुमार बोलो करजोरि । भो महराज सुनो सु बहोरि ॥
तात समान जु मेरो भ्रात । सो तुमने काढ़ो अब दात ॥७३॥
सो तौ फिरै बननमें धाय । हम इहँ बैठे राज कराय ॥

तौ धृग जीवन मेरो होय । यह निश्चे करि जानो सोय ॥७४॥
जाको भ्रात फिरै दुखकार । ताके जीवनकों धृगकार ॥[illegible]॥
तातैं मैं अब ढूंढो जाय । सो भ्राताको ल्याउं बुलाय ॥७५॥
तबहीं भूपति कैसें कही । हमरी बात सुनो तुम सही ॥[illegible]॥
सर्पहि दुग्ध प्यावै कोय । तौ वह बिषही उगलै सोय ॥७६॥
त्यों तुम भ्राता सर्प समान । भूलि न दरशन कीजे आन ॥[illegible]॥
तबै कुमर फिरि कैसें कही । हो महराज सुनो तुम सही ॥७७॥
भ्राता बिन मो रहनो नही । सो अब वाकौं ल्याऊं सही ॥[illegible]॥
बार बार बरजे भूपाल । मोह थकी मानै न कुमार ॥७८॥
तबही भूपति कैसें कही । तोकौं जान देउं मैं नहीं ॥[illegible]॥
किंकर अबमैं देउं पठाय । तेरो भ्रात लेउं ढुढवाय ॥७९॥
भूप हुकुमतें जसबल जबै । चारि ओरकों दौरे तबै ॥

सोतौ एक अरनिके माहिं। दोनो देखे तहां फिराहिं ॥८०॥
इंधनके धारैं शिर भार। फिरैं तहां दोनों नरनारि॥
तब किंकरने कैसें कही। कुमर वचन सुनियो तुम सही॥८१॥

चलि छंद।

आयो अब भ्रात तुम्हारो। जाने सब काम सम्हारो॥
अब तुमहुं बुलाए सोई। चलो ढील करो मति कोई ॥८२॥
तब दुष्टने कैसें कही है। हम बात सुनो जु सही है॥
वाकों बहुत करो तो उपाई। कछु कसरि मैं राखी नाहीं ॥८३॥
मारनको मोहि बुलावै। मेरी भुसखाल भरावै॥
मैंतो जानेको नाहीं। बेंचि ईंधन उदर भराईं ॥८४॥
तब बोली कैसें नारी। पिय बात सुनो सु हमारी॥
पुन्यबंत पुरुष जगमाहीं। औगुन पर गुन नहीं कराहीं ॥८५॥

दयाबंत पुरुष बह जानो । अरु हैं सु गुननको निधानो ॥
तातैं ऐसो काज न होई । बह तौ कुल दीपक जोई ॥८६॥
अरु तुम कह लायक सोई । ताको करो उपाय जु कोई ॥
तातैं बालम सुनि लीजै । मन चिंता कछु नहिं कीजै ॥८७॥
ऐसें पतिकों समझायो । धीरज तब ताहि बंधायो ॥
तब दोनो चले नरनारी । पहुंचे निज नगर मझारी ॥८८॥
गौडें पहुँचे तब जाई । कुमराने खबरि जु पाई ॥
अंबर आभूषण जानो । भेजे तिनको सु बखानो ॥८९॥
जब निजघर पहुंचे जाई । तब भयो है मिलाप बनाई ॥
सनमान कियो सुखकारी । दिये षटरस भोजन भारी ॥९०॥
फिर चाले दोनो कुमारा । पहुंचे नृप सभा मझारा ॥
बज्रसेनि कहैं तब कैसें । महराज सुनो तुम ऐसें ॥९१॥

आयो मुझ भ्राता जोई । इन्ह देहु तातपद सोई ॥
इतनी सुनिके तब राई । महसेनि दयो पहिराई ॥९२॥
पुनि दयो है सोठिपद ताकों । फिरिकैं भूपतिने जाकों ॥
अरु छपन कोटि दीनारा । फिरि सौंपि दए तिन सारा ॥९३॥
फिरि छप्पन ध्वजा गढ़ाई । देशनमें कोठी चलाई ॥
इस विधिसों भ्रात बुलायो । ताको सब दुक्ख नशायो ॥९४॥
जे धन्य पुरुष जगमाहीं । औगुन पर गुनहीं कराहीं ॥
तिनहींको जीवन सार । तिनहीको धन्य अवतार ॥९५॥
दोहा—इस विधिसों जो कुमरने, भ्रात लयो बुलवाय ॥
और कथन आगें भविक, सुनो सबै मनलाय ॥९६॥

चौपाई ।

रहत भयो महसेन कुमार । मनमें कैसें करत विचार ॥

जह लघु भ्राता मेरो जानि । बहुत करे मै औगुन आनि ॥९७॥
जब मन आबै वाके यही । प्राण हने मो छांड़े नहीं ॥
मलिन चित्त सो रहै बनाय । चिंता करि कछु नाहिं सुहाय ॥९८॥
एक समय बज्रसेनि कुमार । कहत भयो भ्रातासों सार ॥
ऐसी चिंता ब्यापी कोय । बदन मलीन सु दीखौ मोय ॥९९॥
सो कहिये मोसैं भ्रम खोय । मनमें संका करौ न कोय ॥
मनकी गांठि खोलि करि सबै । सांची भ्रात कहो सो अबै ॥४००॥
तबै दुष्ट फिरि कैसें कही । जाकौं कहत लाज नहिं भई॥
जब मै देखौं तुम्है कुमार । मोकौं चिंता बढ़ै अपार ॥ १ ॥
जौ मरनौं तेरो अब होय । तौ मै रहौं निकंटक सोय ॥
जह बरतै मेरे मनमाहिं । तोसों सांच कही समझाय ॥ २ ॥

ढार जोगीरासा ।

इतनी सुनिकरि कुमरा जवहीं मनमें विरकित होई ।
धृग यह राज अरु लक्ष्मी जानौ जामें सार न कोई ॥
किनकी माता किसको पिता अरु किसको पुत्र बनाई ।
जाके कारन इतनो कीनो सो भ्राता मो नाहीं ॥ २ ॥
सवरे कुटुमको पाप कमावै नर्क अकेलो जाई ।
जव पावै पुनि नर्क वसेरो तहँ कोई साथी नाहीं ॥
ऐसो राज न मोको चहियै पाऊं दुक्ख घनेरो ।

---

१ इस कथाके छपाते समय हमको दो प्रतियां मिली थीं सो प्रथः छन्द तो इस कथामें सवही गड़ वड़ हैं परंतु वो सव जहां तक हमारी समझमे आए दोनो प्रतियोसे मिलान कर सम्हार दीने ये छंद उन दोनो हीं प्रतियोंमे ठीक पाठ नहीं पाया सो हमारी समझमे आया तहां तक सम्हारा विशेष पाठकोंसे निवेदन है कि यदि शुद्ध प्रति कहीं मिले तो उसकी सूचना हमे भी दीजिये गा ता कि दूसरी वार छपाने पर सम्हार दी जायगी ।

राज करौंगो मुक्ति नगरको पाऊं सुक्ख अनेरो ॥४॥
तबहि भ्रातसों कैसें बोलो भ्रात सुनो तुम सोई।
जह लछिमी मोकों नहिं चहिये चिंत करो मति कोई ॥
मै तो जाऊं अरनि मझारा तजहुं परिग्रह सारा ॥
मोपर भ्राता कीजे छिमा अब रहो निसंक कुमारा ॥५॥
इतनी कहि करि कुमरा जबही निज महलनमें जाई।
निज त्रियसों तब कैसें बोलो नारि सुनो मनलाई ॥
तुम प्रसाद मै भोग सु कीने छमियो चूक हमारी।
मैं तो जाउं अरनिके माही होउं महाव्रत धारी ॥६॥
तुम तो त्रिय अब सुखसों रहियो चिंत करो मति कोई।
इतनी सुनि करि नारी बोली सुनियों कंथ हमारी॥
धन्य जनम अवतार तुम्हरो आछी बात बिचारी।

तुमको भरता छोडि कहां अब कह जु रहो घर माहीं ॥ ७ ॥
मैं हूँ चलि हौ संग तुम्हारे होउं अरजिका जाहीं ।
इतनी सुनिकैं कुमरा जवहीं चलो तहांतें धाई ॥
निज भावजपै तवही पहुंचो ताहि कहै समझाई ।
धनि भावज तुम हमरी जानौ तो सम और न कोई ॥ ८ ॥
तुमने मोपै वहु गुण कीने कहँलौ करहु वड़ाई ।
जो तैंने मेरे प्रान बचाए भावज सुनियों सोई ॥
तौ मै श्री मुनिको पद धारौं मेरी शुभ गति होई ।
तौ मै जाउं अरनिके माहीं होउं दिगंबर भारी ॥ ९ ॥
तातैं छिमा अब मोपर कीजै भावज सुनहु हमारी ।
इतनी सुनिकै भावज बोली धनि देवर तुम सोई ॥
आछी तुमने बात बिचारी तुम सम अवर न कोई ।

जा पापीके संघ सु जानो मैं अब रहि हूं नाहीं ॥ १० ॥
संघ चलौंगी देवर तुम्हरे होउं अरजिका जाही ।
संघ त्रिया अरु भावजकों लै चलो तहांतै सोई ॥
पहुंचो जाय अरनिके माहीं तहां मुनीश्वर होई ।
तीन प्रदत्तन दै शिर नायो प्रभु मोहि दीक्षा दीजै ॥ ११ ॥
फेरि मुनी तब कैसें बोले धनि तोकौं अब सोई ।
तै मोपै जिन दीक्षा जाची तो सम और न कोई ॥
दीक्षा दीनी श्री मुनिवरने भयो दिगम्बर सोई ।
नगन दिगम्बर मुद्रा धारी केस लोंच तब कीनो ॥ १२ ॥
पंच महाव्रत जानै धारो तब चारित्र सु लीनो ।
भावज और त्रिया पुनि ताकी भई अरजिका जाई ॥
पंच महाव्रत तिन अब धारो दुद्धर तप जो कराहीं ।

धनि यह समझ सो बुद्धि जु जिनकी धनि यह धीरजधारी ॥१३॥
इह तौ कथन अब रहो इहांई और सुनो मनलाई ।
द्रोन नगरके भूपतिने पुनि जे खबरैं सुनिपाई ॥
मंत्री तुम्हारे दीक्षा धारी सुनिकैं विरकित होई ।
धृग यह राज सो लछिमी जानौ जामैं सार न कोई ॥१४॥
जेठे सुतकौं राज सु दीनो सबसौं छिमा कराई ।
तब पटरानी सौं नृप बोलो नारि सुनो मनलाई ॥
मैं तौ जाउं अरनिके माहीं होउं मुनीश्वर सोई ।
मो पर छिमा अब सबही कीजौ चिंत करौ मति कोई ॥१५॥
तब रानी सब कैसे बोलीं धनि भूपति सुखकारी ।
धनि धीरज अब तुम्हरो जानौ धनि यह बात बिचारी ॥
हमहूं चलिहैं संग तुम्हारे होय महाव्रत धारी ।

इतनी सुनिकरि भूपति तबही धनि धनि बैन उचारी ॥१६॥
देश देशके राजनको अब ताने खबरि पठाई।
जो कोई जन दीक्षा धारौ सो आवौ अब धाई ॥
बहुत नृपति हितकारी आए संग भए अब सोई।
लै रानी सब नरपति चालो ढील करी नहिं कोई ॥१७॥
चलत चलत पुनि कहलौ आए बाही अरनिके माहीं।
बिनही मुनिपै दीक्षाधारी और सुनो मनलाई ॥
नगन मुनीश्वर होय दिगंबर केश लोंच तब कीनो।
ढसै भूपति संग जु ताके तिन चारित्र सु लीनो ॥१८॥
रानी बहत्तरि संग जु ताके भई अरजिका सोई।
दुद्धर तप तहां सबही करते और सुनो सो होई ॥
राय जसोमति खबरि जु पाई भूप सुनो सुखकारी।

थोरे दिननको मंत्री तुम्हारो गयो हतो तहँ सोई ॥ १९ ॥
द्रोन नगरमे मंत्री भयो हो भूप सुनो तुम सोई ।
ताकी प्रीतिसों तहँके भूपति आय मुनीश्वर होई ॥
तुम कह राय विराजे गरवसों क्यों अब चेतत नाहीं ।
जेठे सुतकों राज सु दीनो सबसों छिमा कराई ॥ २० ॥
तब रनिवासमें भूपति पहुचे कैसें कहे समझाई ।
पटरानीसों तबही बोलो नारि सुनो मनलाई ॥
हमतौ अब जिनदीक्षा धारें चिंत करौ मन नाहीं ।
तब रानी मिल कैसें बोली सुनियों भूप हमारी ॥ २१ ॥
हमहू चलि हैं संग तुम्हारे तप धारै सुखकारी ॥
इतनी सुनिकैं भूपति जबही मनमें आनंद कीनो ।
और सनेही नृपति बुलाए ते आए परवीनो ॥ २२ ॥

सबरे संगको नरपति लैकें लै रनिवास जु भारी ।
बाही अरनिमैं तबही पहुंचो मुनिपै दीक्षा धारी ॥
बासठि राजा संघ जु ताके भए मुनीश्वर सोई ।
रानी सप्त जो भई अरजिका तप करतीं तहँ सोई ॥ २३ ॥
इस विधिसों पुनि बावन राई भए मुनीश्वर सारी ।
दुद्धर तप पुनि तहँ अब करते सहत परीषह भारी ॥
धनि उपदेश कुमरको जानो भयो सबै सुखकारी ।
छांड़ि जगति खुख मुनिपद धारो तिन पद धोक हमारी ॥ २४ ॥
दोहा—इस विधिसों बा अरनिमै, भए मुनीश्वर सार ।
धनि उपदेश कुमारको, भयो सबै सुखकार ॥ २५ ॥

ढार त्रिभुवनगुरु स्वामी जी ।

बज्रसेनि महराजा जी धरम जिहाजा जी ।

अति घोर तप करत तहां अब जानियों जी ॥
पावस ऋतुमाहींजी तरुतल सु रहाइं जी ।
अति घोर तब वर्षा सहत सु जानियो जी ॥ २६ ॥
शीतकालके माहीं जी नदितीर रहांईं जी ।
कै तालकी पारिपै कर्मन नाशियो जी ॥
ग्रीषम ऋतु माहीं जी परबतपै रहाइं जी ।
जहँ भानुतपैं अरु पर्वत जानियो जी ॥ २७ ॥
द्वैवीश परीषह जी जु सहैं जगदीशा जी ।
उपसर्ग सहैं धीर वीर सुखकारी हैं जी ॥
अरि मित्र बरावर जी समभाव सु धारै जी ।
नहीं राग अरु दोष न काहूपै करावहीं जी ॥ २८ ॥
षट करुना पालैं जी सब दुखकौं टालैं जी ।

भुवि सोधि सु चालैं करुना निधि पालहैं जी ॥
दुद्धर तप कीनो जी भयो तन छीनो जी ।
अति घोर तप करो सो जानियो जी ॥ २६ ॥
द्वै मासको जानौ जी उपवास सु ठानो जी ।
कारन आहार सो नगरमे आईया जी ॥
इक धनुष प्रमाना जी भुम्र सोधि महाना जी ।
नासा दृष्टि धारैं पुनि चित न चलावहिं जी ॥ ३० ॥
नगरीमै जानो जी अहारके कारन जी ।
दुठ भ्रातकी नजरि परे सो जानियो जी ॥
मनमैं सु विचारै जी मम बैरी सु आवै जी ।
मेरी नारि अरजिका जानै कराइयो जी ॥ ३१ ॥

जाकौं पड़गाहौं जी बिषाऽहार जिमाऊं जी।
इस भांति सु जाके प्रान हनाइयें जी ॥ ३२ ॥
मुनिवर पड़गाहे जी जाके घर आए जी।
मुनि पुन्य तनो फल अब सुनि लीजियो जी ॥
इक सुर जहँ आयो जी सूकर बनि धायो जी।
मुनिराजके ढिग तहँ ठाड़ो भयो आनिकैं जी ॥ ३३ ॥
अंतराय करायो जी मुनिवर जु फिरायो जी।
फिरि जाय अब बनमे श्री मुनि पहुंचियो जी ॥
तब अवधि विचारी जी जह बैरी भारी जी।
तातैं पूरब बैर चुकाय अब दीजियै जी ॥ ३४ ॥
एकांतर जाई जी जिन ध्यान धराई जी।
अति धीर तहँ ठाड़े अरनिके माहीं जी ॥

जब दुष्ट बिचारी जी ले खड़ग सु भारी जी।
ताकों अब जाय सो तौ अब शिरमें छेदि हौं जी ॥ ३५ ॥
लै खड़ग सु चालौ जी पापी अति भारी जी।
मुनिपै अब जाय खड़ग सु चलाइयो जी ॥
फिरि सुर जहँ आयो जी तसु कर सु बँधायो जी।
तहँ ठाड़ो अब इत उत चलि नहिं पावहीं जी ॥ ३६ ॥

चालि छंद।

भूपतिने खबरि जु पाई। जसबल दीने दौराई ॥
फिरि मुसकैं ताकीं चढ़ाई। लै आए नगरके माहीं ॥३७॥
फिरिकैं रासभ मगवायो। तापर असबार करायो ॥
अरु मुखकारो जब कीनो। ताकों दीरघ दंड सु दीनो ॥३८॥
फिरि सबरे नगर फिरायो। जाके आगें ढोल वजायो ॥

धृग धृग सबही उचारै। बालक मिलि कंकर मारैं ॥३९॥
फिरि देशतैं दयो कढ़वाई। धन लक्ष्मी सब लुटवाई ॥
भूपतिनै दुहाई फिराई। सोतौ सब देशन माहीं ॥४०॥
जाकों जो बैठन देहौ। ताकी भुसखाल भरैहौं ॥
इस विधिसों जानो सोई। ताकों तहँ दंड सु होई ॥४१॥
अब रहै बननके माहीं। तहँ तौ अब भृमन कराहीं ॥
मुनि घातक सोय कहावै। काहू ठौर वैठ नहिं पावै ॥४२॥
जहँ जाय तहां दुख होई। कर कंकर मारत सोई ॥
ऐसे भृमतो बन माहीं। छिन साता ताकों नाहीं ॥४३॥
तृष छुधा सहै अधिकारी। सो जानो बहु दुख भारी ॥
परनाम रुद्र जो करिकैं। जाने छोड़े प्रान दुख भरिकैं ॥४४॥
फिरि छटमे नर्क जु माहीं। अवतार लयो सो ताहीं ॥

सत्ताइस सागर जानो । ताकी तहँ आयु बखानो ॥४५॥
तहँके दुखकी अब सोई । कहिबे समरथ नहिं कोई ॥
गनधर हू गम्य जु नाहीं । जानै सो केवल माहीं ॥४६॥
तातें नर नारि सुनीजै । बैर भाव कदापि न कीजै ॥
राखौ समता अब सोई । तातैं बहुतै सुख होई ॥४७॥
दोहा—इस विधिसों अब दुष्ट वह, परो जु नर्क मझार ।
और कथन आगें भविक, सुनो सबै नरनारि ॥४८॥

चौपाई छंद ।

अब तो बज्रसैंनि मुनिराय । दुद्धर तप कींनो अधिकाय ॥
अंत समाधि मरन सो ठान । शुद्ध भावतैं त्यागो प्रान ॥४९॥
पहुंचे षोड़स स्वर्ग मझार । भयो इंद्रपद ताकों सार ॥
बाइस सागर आयु प्रमान । सुंदर रूप सु गुनहिं निधान ॥५०॥

तहँके सुख भोगै अब जाय । कवि कहिबे समरथ नहिं ताय ॥
ताकी त्रियने बहु तप कियो । अंत सन्यास मरन तब लियो ॥५१॥
शुधभावन तजि प्रान सु सार । इंद्रनी ताकी सुखकार ॥
ताकी भावज है सुखकार । कीनो तप दुद्धर अधिकार ॥५२॥
सही परीषह ताने सार । तहँ उपसर्ग भए जु अपार ॥
अंत सन्यास मरन करि जबै । शुद्धभाव तजि प्रान सु तबै ॥५३॥
स्त्री लिंग छेदि सुखकार । ताही स्वर्ग लयो अवतार ॥
ताकी महिमा बरने कोय । इंद्रके ढिग प्रतिइंद्र जु होय ॥५४॥
अब तौ द्रोन नगरके राय । दुद्धर तप कीनो सुखदाय ॥
अंत समाधि मरन करि सार । द्वादश स्वर्ग लयो अवतार ॥५५॥
तहँके सुख भुंजै अब सोय । आगें और सुनो सो होय ॥
राय जसोमतिने तप करो । अंत सन्यास मरन तब धरो ॥५६॥

सो तौ अष्टम स्वर्ग मझार । भयो देव पद ताकौं सार ॥
बहुत बात को कहै बढ़ाय । बहुत कहैं तौ कथा बढ़ि जाय ॥५७॥
जिन जिननै जैसो तप करो । तिन तिननै तैसो पद धरो ॥
इस विधिसों सबही नर नारि । लयो स्वर्ग पद तिन अवतार ॥५८॥
देखौ दान तनो फल सोय । ताको इंद्रासन पद होय ॥
तातैं नर नारी सुन लीजै । नितप्रतिदानचतुर्विधि दीजै ॥५९॥
दान समान अवर नहिं कोई । जासों अजर अमर पद होई ॥
तातैं भव्य जीव सुनि लीजै । वितमाफिकनितदानसुदीजै ॥६०॥
लखि सुपात्रको दीजै दान । दुखित भुखितकै पोषै प्रान ॥
एकहु पुरुष जु संग जिमावै । दुखी देखिकैं पोष करावै ॥६१॥
जौ इतनीहूं सकति न होय । एकहि रोटी दीजै कोय ॥
जौ इतनी हूं सकति न होय । एकहि ग्रास देउ भवि लोय ॥६२॥

बहुत बात को कहै वखान । वित माफक नित दीजे दान ॥
तातैं नर नारी सुन लीजे । दान विनाभोजननहिं कीजे ॥६३॥
दानहितैं हरि हलपद पावे । दानहितै चक्री गुन गावै ॥
दानहितै अहमिंद्र कहावे । दानहितैं शिव सुंदरि पावे ॥६४॥
बहुत बात को कहै बढ़ाय । दानहितैं त्रिभुवनको राय ॥
तातैं नर नारी सुन लीजै । दान बिनाभोजननहिंकीजे ॥६५॥

चौपाई ।

दानकथा यह पूरन भई । भारामल्ल प्रघट करि कही ॥
भूल चूक अक्षर जो होय । पंडित शुद्ध करौ तुम सोय ॥६६॥
मैं मतिहीन जु हौं अधिकार । छमियोबुधिजनसवनरनारि ॥
पढ़ै सुनै जो अव मनलाय । जनम जनमकेपातिकजाय ॥ ६७ ॥
दुख दलिद्र सब जाय नशाय । जो यह कथा सुनै मनलाय ॥

पुत्र कलित्र बढ़ै परिवार । जो यह कथा करै विस्तार ॥६८॥

दोहा—दानकथा पूरन भई , पढ़ौ सुनौ नित सोय ।
दुख दरिद्र नाशै सबै , तुरत महाफल होय ॥ ६९ ॥

लघु धी तथा प्रमादसों , शब्द अर्थ की भूल ।
सुधी सुधारि पढ़ौ सदा , ज्यों पावौ भवकूल ॥ ७० ॥

जैसी पुस्तकमें लिखी , तैसी छापी सोय ।
शुद्ध अशुद्ध जु होय कहूं , दोष न दीजो सोय ॥ ७१ ॥

इति दानकथा समाप्त ।

पुस्तकें मिलने का पता—

बद्रीप्रसाद जैन पो० नीबकरोड़ी जि० फतेगढ़ ।

श्रीसमोशरण पूजन विधान भाषा।

ऐसा कौन प्राणी जैन समाजमें होगा जो कि समोशरणके माहात्म्यसे अनभिज्ञ होगा अर्थात् सबही जैनी समोशरणमहिमासे परिचित हैं जिन तीर्थंकरदेवने घातिया कर्मोंका नाशकर डाला है उन्हें केवलज्ञान प्राप्त होय है तव इन्द्रआज्ञासे कुवेर समोशरणकी रचना करै है तिसका वर्णन इस प्रकार है प्रथम कोटके चार द्वारनपर चार मानस्थम्भ होय हैं जिनको देखकर मानी जनोंका मान जाता रहै है अर्थात् भगवानकी पुण्य प्रकृतिका ऐसा उदय है कि जिनके अतिसय कर नम्री भूत होय हैं और जब भीतर जायकर समवशरणस्थ विभूतिको देखै हैं तब तौ प्राणियोंके अनेक विकल्प दूरि भागि जांय हैं जैसे प्रभूके प्रभामण्डल झलके है उसमें प्राणियोंके सात २ भव दिखाई परैं हैं अर्थात् तीन जन्म पहिले के और एक वर्तमान तीन जन्म जो अगाडी होवैंगे ऐसी २ आश्चर्य कारी अनेक बातोंको देख कर क्रोधही है स्वभाव जिनका जैसे मूसाको देखनेसे विलावको, सर्पके देखनेसे मोरको, तथा हिरणको देखकर सिंहको होता है ऐसे २ जाति विरोधी जीव भी शांति स्वभावी होय एक स्थानमें तिष्टे है और धर्मोपदेश सुनकर अपना २ कल्यान करैं हैं इत्यादि समोशरण की महिमा कहां तक लिखी जाय कोई मन्द बुद्धी सागरको गागरिमें नहीं भर सक्ता है अब उसी समोशरणका पाठ भाषा लालजीतकृत छपाया है सो पाठकोंसे विनय करता हूं कि स्वयं पुस्तक मगाकर पढ़िये और संतुष्ट हूजिये।

पता—बद्रीप्रसाद जैन, पो० नीबकरोड़ी (फतेगढ़)